सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय

प्रेस विज्ञप्ति – 20th January, 2017

ऊर्जा, विचार, विश्वास और शब्दों के सहारे कई हीलिंग प्रणालियों में उपचार

सांची विश्वविद्यालय में समन्वित चिकित्सा कार्यशाला का समापन

3 दिन में करीब 30 पारपंरिक चिकित्सा पद्धतियों में बीमारी को समझने के सिद्धांतों और संकेतों के साथ इलाज के दर्शन और विधियों पर चर्चा, विभिन्न हीलिंग पद्धतियों में समन्वय के साथ एक दूसरे की पद्धतियों को समझने और मिलकर काम करने के विश्वास के साथ सांची विवि में समन्वित चिकित्सा कार्यशाला का समापन हुआ। तीन दिन तक विभिन्न पारंपरिक चिकित्सा के विशेषज्ञों अपनी प्रणाली की खूबियों को समाविष्ट और कमजोरियों को दूसरी विधा से परिपूरित करने को तत्पर दिखे। सवाल ये भी उठे कि क्या कोई ऐसा समुद्र है जहां सभी विधियां मिलती है। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए विवि के कुलसचिव श्री राजेश गुप्ता ने कहा कि खुद से खुदा तक पहुंचने की राह में खोदना पड़ेगा और खाद देना पड़ेगी और ऐसा नहीं हो पाया तो खेत ही रह जाएगा। उन्होने कहा कि हमें एक गंभीर यात्रा की शुरुआत की है और ताकत के साथ अपनी कमजोरियों पर भी विचार की जरुरत है ताकि जुड़ाव के बिंदु मिल सके। उन्होने निर्माण से निर्वाण की यात्रा में बहुत सावधान रहने की भी जरुरत बताई।

शुक्रवार को **चक्र एवं ऑरा थैरेपी** में विभिन्न चक्रों में ऊर्जा का समन्वय स्थापित कर बीमारी दूर करने की बात हुई। डॉ रीता महाजन ने बताया कि डीएनए एक्टीवेशन और नजरिया बदलकर नजारे बदले जा सकते हैं। **लामा फेरा** में महर्षि शाल्विक द्वारा कीलित किए गए साढ़े चार लाख मंत्रों को खोलने वाले सद्गुरु सत्यानंद की इस थैरेपी में 12 संकेतों के जरिए असाध्य रोगों के इलाज पर काम किया जाता है। डॉ गणेश दुबे ने बताया कि खुद को बदलने पर काम करना और मूल ऊर्जा को बढ़ाना ही सबसे बड़ा काम है। **कला आधारित चिकित्सा** के डॉ आदित्य तिवारी ने संतुलन में रहने, जागरुक रहने और खेल-खेल में गहरे बैठ चुकी किसी ग्रंथि को खत्म करने की पद्धति समझाई। **संगीत चिकित्सा** में राग,ताल और स्वर के सहारे कई तरह के अवसाद और बीमारियों के इलाज पर बात हुई। **हिप्नोसिस** में पुरानी स्मृतियों को हटाने और ऊर्जा संचालन पर बात हुई। इस पद्धति में मुंबई से आई डॉ ज्योतिका छिब्बर ने सपनों के जरिए बीमारी का पता लगाने और उसके इलाज पर भी प्रकाश डाला।

तीन दिनों के दौरान खुद को समझने और अपने उद्देश्य को तय करने वाली पद्धति विपस्सना पर बात हुई जिसमें शरीर की प्रतिक्रियाओं को समझकर उनका बुद्धिमतापूर्ण ढंग से इस्तेमाल करना सीखा जा सकता है। **स्माइल थैरेपी** में सिकुड़ने, ठहरने, फैलने और फिर स्थिर होने के साथ सबकुछ नियमित, नियंत्रित और संचालित करने वाली शक्ति के साथ संतुलन बैठाकर परमशक्ति से संवाद और बुद्ध जैसी निश्चल मुस्कान को **ट्राइओरिजिन स्माइल थैरेपी** से पाने की बात हुई। वैदिक ज्योतिष में अंदरुनी कुंठा को छोड़ और ग्रह योग, राशि और स्थान के ज्यामितिय आकलन के सहारे रोगी की प्रकृति और उपचार से बेहतर नतीजे प्राप्त करने को समझाया गया। **क्रिएटिव विजुलाइजेशन** में विचारों की शक्ति और उसके सहारे विचार और संवेदना को जागृत कर कुछ भी पा सकने की बात हुई। **मंत्र थैरेपी** में भक्तांबर के 48 श्लोकों के सहारे कई असाध्य रोगों की चिकित्सा और ठीक होने के उदाहरण प्रस्तुत किए गए। **वैदिक स्पीरिचुअल हिप्नोसिस** में विचारों और संवेदनाओं पर नियंत्रण के सहारे परिस्थति और पर्यावरण दोनों को बदलने को समझाया गया। **ट्रांस मेडिटेशन** के सहारे अद्भुत परिणाम पाने का प्रदर्शन किया गया। संगीत चिकित्सा के जरिए दिमाग और शरीर को व्याधिमुक्त करने का प्रस्तुतिकरण दिया गया। इलेक्ट्रो होमियोपैथी में पेड़ पौधों से प्राप्त दवाइयों के जरिए असाध्य बीमारियों के सफल इलाज का प्रदर्शन किया गया। **क्वांटम एनर्जी हीलिंग** में खराब स्मृतियों को हटाकर ऊर्जा का प्रवाह बढ़ाकर शुरुआती स्तर पर डीएनए में बीमारी को खत्म करने की बात हुई। कपिंग थैरेपी में **शरीर के विभिन्न हिस्सों में वैक्यूम कप लगाकर नकारात्मक ऊर्जा को खींचकर उस स्थान पर रक्त प्रवाह बढ़ाने की बात हुई।** साइको न्यूरोबिक्स में कैंसर से ठीक होने और ऊर्जा स्तर के संतुलन पर चर्चा हुई। **ग्रेफोलॉजी** यानि हस्तलिपि के आधार पर बीमारियों का पता लगाने , स्वास्थ्य में सुधार और बेहतर ऊर्जा का प्रस्तुतिकरण हुआ। वहीं **पास्ट लाइफ रिग्रेशन** और **इनर चाइल्ड वर्क** के सहारे बीमारी की जड़ों की खोज पुराने जीवन में करने और उन्हें हील कर मौजूदा मुश्किलों को खत्म करने की बात की गई।

कार्यशाला के संयोजक डॉ अखिलेश सिंह ने तीन दिन की गतिविधियों का सार प्रस्तुत किया। विवि के डीन डॉ नवीन कुमार मेहता ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

- सांची विवि में समन्वित चिकित्सा कार्यशाला का समापन
- पारंपरिक प्रणालियों में बीमारी की पहचान और निवारण के तरीकों पर चर्चा
- पारंपरिक प्रणालियों और पैथियों में समन्वय के बिदुंओं पर विचार
- विपस्सना, सृजनात्मक दृश्यता, वैदिक ज्योतिष, मंत्र चिकित्सा, तिब्बती संगीत चिकित्सा,
- ट्रांस ध्यान, वैदिक अध्यात्म, गंध चिकित्सा, हिप्नोटिस्म, लामा फेरा, संगीत चिकित्सा , रंग व अंक चिकित्सा